OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 3

आपके दो जन्म...?

मनुष्य जन्म एक ऐसा चौराहा है, जहां से सब दिशाओं में मार्ग जाते हैं। यही उसकी विशिष्टता है। अनंत संभावनाएं मनुष्य के लिए अपना द्वार खोले खड़ी हैं। मनुष्य जो भी होना चाहे हो सकता है। पशुओं का भाग्य होता है, मनुष्य का कोई भाग्य नहीं। मनुष्य के अलाव जो भी पशु-पक्षी हैं वे अपने नश्ल के अनुसार ही पैदा होंगे, जियेंगे और मरेंगे, जैसेकि कुत्ता कुत्ते की तरह ही पैदा होगा, जियेगा और मरेगा। इससे अन्यथा होने का कोई उपाय नहीं। मनुष्य कोरे कागज़ की भांति पैदा होता है, जिसपर कोई भी लिखावट नहीं है, फिर जो लिखता है स्वयं, वही उसका भाग्य बन जाता है। मनुष्य अपना भाग्य-निर्माता है, अपना स्रष्टा है।

- ब्र. कु. गंगाधर

अगर हाथी-घोड़े-गधे ज्योतिषियों के पास जाएं तो समझ में आता है। मनुष्य जाए तो बात बिल्कुल समझ में नहीं आती। मनुष्य का कोई भाग्य नहीं है जिसे पढ़ा जा सके। मनुष्य तो केवल एक अनंत संभावनाओं, अनंत बीजों की भांति पैदा होता है। फिर जिस बीज को बोएगा, जिस बीज पर श्रम करेगा, वे ही फूल उसमें खिल जाएंगे। कोई विधाता नहीं है। हम प्रतिपल अपने प्रत्येक विचार, अपने प्रत्येक कर्म से स्वयं का निर्माण कर रहे हैं। इसलिए एक-एक कदम सूझ-बूझ कर उठाना और एक-एक पल होश से जीना। अज्ञान में जो जी रहा है, वह मनुष्य ही नहीं है।

संस्कृत के विधान और विद्वानों द्वारा किये गए अनुवाद में थोड़े फर्क आ गए हैं। संस्कृत का सूत्र है: मनुष्यत्वं– मनुष्य-तत्व, मनुष्य चेतना और विद्वानों ने अनुवाद किया : मनुष्य-देह। गहरी भूल हो गई वहां। मनुष्य की देह मनुष्य का तत्व नहीं है। देह तो और पशुओं के पास भी है। देहों में क्या भेद? सब मिट्टी के खिलौने हैं। ऐसा बनाओ कि वैसा बनाओ। माटी कहै कुम्हार सूं तू का रूंधे मोहि। कहती है मिट्टी कुम्हार से, तू मुझे क्या रूंधता है। आएगा एक दिन, आएगी वह घड़ी, जब मैं रूंधूंगी तोहि! जब मैं तुझे रूंध डालूंगी।

एक ही सोने से हज़ार तरह के गहने बन जाते हैं। एक ही मिट्टी से हज़ार तरह के घड़े बन जाते हैं। देह का तो कोई मूल्य नहीं है। फिर देह मनुष्य की हो, कि पशु की हो, कि पक्षी की हो, कि वृक्ष की हो- इससे कुछ भेद नहीं पड़ता। मूल सुभाषित मनुष्य-तत्व की बात कर रहा है। मनुष्य-तत्व मनुष्य-देह से बहुत भिन्न बात है। जो मूर्च्छित (अज्ञान में) है, वह मनुष्य होकर भी मनुष्य नहीं। जो जागा, उसने ही मनुष्य होना शुरु किया। मनुष्य होने के लिए दो जन्म चाहिए। और सब पशुओं का एक ही जन्म होता है। एक बार जन्मे और फिर इसके बाद मौत है। मनुष्य द्विज हो सकता है। द्विज होना ही ब्राह्मण होना है।

द्विज होने का अर्थ है : माता-पिता से तो पहला जन्म मिलता है, ज्ञान के अनुरूप चलकर दूसरा जन्म मिलता है। ज्ञान और योग से अपने भीतर के अस्तित्व का परिचय मिलता है, पहचान होती है। तब वास्तविक जन्म मिला।

पहला जन्म तो मौत में जाकर गिर जाएगा। पहला जन्म तो कब्र में जाकर समाप्त हो जाएगा। झूले में और मरघट में कुछ बहुत फासला नहीं– चाहे सत्तर साल ही क्यों न लग जाएं झूले से कब्र तक पहुंचते-पहुंचते, मगर इस अनंत काल में सत्तर वर्षों की क्या कीमत, क्या बिसात! हां, दूसरा जन्म सच में जन्म है, क्योंकि उससे जीवन की शुरुआत होती है, जिसका फिर कोई अंत नहीं। शाश्वत जीवन जब तक न मिले तब तक जानना अभी तुम मनुष्य नहीं हो।

इसलिए, अनुवाद में मनुष्य-देह रखना सही नहीं है, मनुष्य-तत्व सही है। सभी मनुष्य मनुष्य नहीं हैं। जिसने अपने भीतर की चैतन्य धारा को पहचाना, वही मनुष्य है। मगर हम चाहते हैं कि हम सबको मनुष्य माना जाए, क्योंकि हमारे पास देह मनुष्य जैसी है। निश्चित ही, बुद्ध के पास भी ऐसी ही देह थी, महावीर के पास भी, क्राइस्ट के पास भी, कृष्ण के पास भी, नानक के पास भी और कबीर के पास भी। मगर इस देह पर वे समाप्त नहीं थे। यह देह तो केवल सीढ़ी थी। इस देह से वे वहां पहुंच गए जो देहातीत है। उसे पाकर ही वे ठीक अर्थों में मनुष्य हुए।

इसलिए जीज़स ने बहुत प्यारी बात कही, बार-बार कही है। कहीं जीज़स कहते हैं मैं मनुष्य-पुत्र हूँ और कहीं कहते हैं मैं ईश्वर पुत्र हूँ। दोनों का उन्होंने भरपूर उपयोग किया है। और ईसाइयत दो हज़ार सालों से चिंतन में पड़ी रही है कि क्या मानें जीज़स को? मनुष्य का बेटा या ईश्वर का बेटा? क्योंकि जीज़स दोनों का ही उपयोग करते हैं। निश्चित ही, ईसाई पंडितों-पुरोहितों को बड़ी बेचैनी रही है कि क्यों जीज़स ने कहा कि मैं मनुष्य का बेटा। इतना ही कहा होता कि मैं ईश्वर का बेटा; बात सीधी-साफ थी। यह उलझन क्यों खड़ी कर दी? मगर ध्यान से समझें तो इसमें उलझन ज़रा भी नहीं है। मनुष्य होना और भगवान समान होना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जो मनुष्य हो गया, उसने जान ही लिया कि वह भगवान समान है। भगवत्ता की पहचान ही मनुष्यता है। भगवत्ता की पहचान का ही नाम मनुष्य-तत्व है।

तीन चीज़ें दुर्लभ हैं– अति दुर्लभ हैं। मनुष्य होना; फिर मुमुक्षा का होना; फिर सत्संग–जहां ज्ञान सिद्ध हो, जहां एक ज्योति दूसरी ज्योति से मिले-जुले। क्योंकि मनुष्य की तरह जन्मने में तो कोई बड़ी कठिनाई नहीं, जैसे और कीड़े-मकोड़े पैदा होते हैं ऐसे ही मनुष्य भी पैदा होता है, लेकिन और कोई भी प्राणी आत्म-साक्षात्कार नहीं कर सकता। मनुष्य कर सकता है। बीज है, इसलिए वृक्ष भी हो सकता है। इन संभावनाओं को देखकर पहली अति दुर्लभ बात है इस जगत में : मनुष्य की भांति पैदा होना।

स्टूडेन्ट लाइफ दर्शनीय मूर्त बनाती

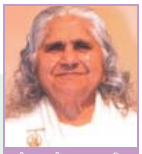
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हमारी स्टूडेन्ट लाइफ होने के कारण स्ट्डी से प्यार है तो संगठन में बैठ करके जो बाबा सिखा रहा है वो रिवाइज़ करते हैं। सच्चे पुरुषार्थी को रिवाइज़ के बाद रियलाइज़ेशन अच्छी होती है। तो हमारे बाबा ने अपना बनाके मुस्कराने की ट्रेनिंग दी है इसलिए मंदिरों में देवताओं का दर्शन करने से ही खुश हो जाते हैं। अभी हम इस स्ट्डी से दर्शनीय मूर्त बन रहे हैं। कुम्भ के मेले में तो साधू सन्यासियों के दर्शन के लिए भीड़ लगती है। अभी हम देवता बनने वाली आत्मायें ऐसा दर्शनीय मूर्त बनें। जब भी याद में बैठते हैं तो हरेक अपने आपको देखे या बाबा को देखे..वन्डर है। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है वो दिखाई पड़ता है। जो अंदर भावना है वो स्वरूप में दिखाई पड़ती है, अनुभव होता है।

बाबा को किसका नाम बिल्कुल याद नहीं आता था इसलिए बच्ची बच्ची कहता था, इत्तफाक से कोई एक दो को नाम से बुलाता था। तो मेरा भी यह हाल हो गया है, नाम भूल जाता है इसलिए यह बाबा का बच्चा है। जब बाबा का बच्चा हूँ तो खुशी होती है फिर स्टूडेन्ट लाइफ है। जब मैं ज्ञान मार्ग में आयी तो किसी ने पूछा कब तक यह पढ़ाई पढ़ोगी? मैंने जवाब दिया जब तक जिऊंगी तब तक पढ़ूंगी। तब इतना थोड़ेही पता था कि इतना समय जीना है, इस पढ़ाई के लिए जीना है। जहाँ तक जीना है वहाँ तक पढ़ना है इससे फरिश्ता रूप बनेंगे। फरिश्ते ऊपर रहते हैं। जब पहले छोटे हैं तो त्याग वृत्ति है, फिर कारोबार में हैं तो अनासक्त वृत्ति है, अब उपराम वृत्ति है। वाह! कुछ मेरा नहीं है। त्याग तो हो गया और छोड़ा तो छूट गये। कोई बात न पकड़ी है, न पकड़ सकते हैं। आज बाबा ने कहा मायाजीत तो बन गये हो, प्रकृतिजीत भी बन जाओ। धरती, पानी सब नाटक दिखायेंगे, नीचे ऊपर होंगे परन्तु समय अनुसार प्रकृति को भी सतोप्रधान बनना है ना। तो अभी तक तमोप्रधानता छोड़ती नहीं है, पर हम तो प्रकृति के मालिक हैं। परमात्मा है बाप, प्रकृति है माँ। अगर यह धरती माँ न होती तो पार्ट कहाँ बजाते? आसमान न होता तो कैसा होता? प्रकृति के पाँच तत्वों की इस दुनिया में शरीर भी पाँच तत्वों का है। बाप कौन है, बाप का घर कौन-सा है, यह पता नहीं था। ऐसे प्रकृति में माया प्रवेश हो गयी। आगे समझते नहीं थे, माया क्या है? प्रकृति अलग है, शरीर अलग है इसमें माया प्रवेश हो गयी है। माया के पाँच विकार हैं, प्रकृति के पाँच तत्व हैं। यह नॉलेज इतनी अच्छी है कि जितना गहराई में जा सको, जाओ। तो प्रकृति को भी जान लिया, माया को भी जान लिया, बाप को भी जान लिया, खुद को भी जान लिया। तो इस ज्ञान को सारे दिन में अच्छी तरह से मनन-चिंतन करो फिर ऐसे नहीं लगेगा कि रूखी सूखी कोई काम की नहीं हूँ। अगर बाबा के काम का बनना है तो अपने अंदर ऐसी सफाई करो जो मैं किसकी हूँ वो स्पष्ट पता पड़ने लगे। सफाई नहीं होती है तो यह परदर्शन, परिचिंतन मैला बना देता है। कोई ऐसा अच्छा काम करो, जहाँ भी जाओ वहाँ की अच्छी बातों को ग्रहण करो तो वो अच्छा बन जाता है। नहीं तो कोई ऐसी वैसी बात अंदर चली जाती है और वो जैसे ही इन्टर करती है तो फियर होना शुरु हो जाता है। जहाँ फियर (डर) होगा वहाँ चिंता होती है, तो कभी खुशी नहीं हो सकती है। जिसे चिंता और कोई बात का डर है तो उसे कभी खुशी नहीं होगी। तो भगवान ने जो खुशी दी है वो खुशी बाँटो।

शुरु से ले करके बाबा ने जो जो समझाया है वो करने के लिए प्रेर रहा है। कह रहा है चल उठ...ऐसी स्थिति बनाने के लिए प्रयास करने वालों को प्रेरणा मिलेगी। भले कितना भी कुछ करे, उसमें खुश होवे पर उनसे कोई को वैसा बनने की प्रेरणा नहीं मिलेगी, ऐसी लाइफ कोई काम की नहीं है। जिसमें देह-अभिमान है वो इतनी सेवा नहीं कर सकता है। जो देह अभिमान से मुक्त है उनसे ऑटोमेटिकली कई प्रकार की सेवायें होंगी। जो ऐसा कोई के लिए मिसाल अनुभवी बनें तो अन्य को भी प्रेरणा मिलती है।

आत्मिक स्मृति की परिपक्वता से अव्यक्त की ओर ले जाते हैं बाबा

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

दिन-प्रतिदिन बाबा हमें अव्यक्त बना रहा है, भले व्यक्त में हैं लेकिन व्यक्त में होते हुए भी व्यक्त की स्मृति से परे मैं आत्मा हूँ। शरीर तो आधार है लेकिन मैं कौन हूँ? मैं तो आत्मा ही हूँ। तो इसी स्मृति में बैठने से, चलने से मज़ा बहुत आता है। जैसे साक्षी होके अपने आपको देख भी रहे हैं लेकिन हमारे सामने सदा नयनों में बाबा ही है। हम तो यहाँ देखते हैं ना, यह चित्र तो मुझे ऐसा ही लगता है जैसे साकार में बाबा बैठा है। बाबा के नयनों में देखो, कितना अच्छा मुस्करा रहा है। ऐसे लगता है जैसे साकार में बाबा बैठा है, यह चित्र नहीं है। अगर ज़्यादा टाइम आप उस रीति से देखो ना, तो आपको चित्र नहीं लगेगा। एकदम ऐसे लगता है जैसे बाबा सामने आ गया है, चैतन्य में है। चित्र बनाने वालों ने बाबा के चित्र में ऐसा कुछ न कुछ भर दिया है। हम लोगों के साथ तो साकार में बाबा चौबीसों घण्टे रहते थे, वो लाइफ देखो कितनी प्यारी थी। खाने पर बैठते थे तो भी बाबा बच्चों के साथ उसी रूप में होते थे। बाबा पहले चक्कर लगायेगा, देखेगा खाना सबको ठीक मिला या नहीं फिर शुरु करायेगा तभी निश्चिंत होगा। छोटे थे ना, तो बाबा जगह-जगह पर ऐसे प्यार से हाथ पकड़कर पूछता था कि बच्ची कैसी हो! बच्ची कैसी हो! तो यह चित्र देखकर मुझे ऐसा लगता है जैसे चैतन्य में बाबा आगे खड़ा है क्योंकि हम लोगों ने देखा है ना।

प्रश्न: दादी! साकार, अव्यक्त और निराकार आप तीनों एक में ही देखती हैं कि अलग-अलग अनुभव करती हैं? आप जब ऊपर बाबा के पास जाती हैं तो एक बार आपने संदेश में सुनाया था कि शिवबाबा से भी मिले फिर ब्रह्माबाबा से भी मिले, तो दोनों से अलग-अलग कैसे मिलेंगे?

उत्तर: अलग-अलग अनुभव होता है, साकार में भी बिन्दी तो दिखाई देती थी। साकार में अटेन्शन वहाँ ही जाता था। बाबा की भृकुटी में यहाँ प्रैक्टिकल में चमक थी। कोई-कोई फोटो में भी वो चमक आ जाती थी। जैसे ऊपर में निराकार है ना, वो हमको मस्तक के बीच में नज़र आता था। वतन में जब जाते हैं तो पहले जैसे हम साकार में बाबा से मिलते हैं, फिर थोड़े टाइम के बाद साकार रूप अव्यक्त रूप में बदली होती है। जैसे साकार में बाबा से बातें की, बाबा ने दिल लिया, बात कर ली, फिर कुछ टाइम के बाद साकार रूप बदली होता है यानि अव्यक्त और साकार दोनों से मिलन हुआ, अंतर सिर्फ लाइट का होता है। यह सीन अगर हम साकार में भी इमर्ज करेंगे तो यहाँ साकार में भी वो अनुभव होगा।

प्रश्न: दादी! हम अगर अव्यक्त बापदादा को याद करते हैं तो आपका फेस सामने आता है या दादियों के द्वारा जो पालना मिली है, अव्यक्त बापदादा से जो पालना मिली है, वह सीन याद आती है, तो क्या यह सही है?

उत्तर: हाँ, बाबा का वो शरीर तो नहीं है ना। परन्तु आप जिस समय भी याद करो तो बाबा को उसी अव्यक्त रूप में ही देखेंगे। आपने व्यक्त शरीर तो देखा ही नहीं, तो आपके आगे अव्यक्त ही आयेगा यानि इमर्ज करते हैं तो वही आयेगा। आप इमेजिन कर सकते हैं। आपको अव्यक्त सीन ही सामने आयेगा। अव्यक्त कहानियाँ याद आयेंगी। हमारे आगे साकार बाबा की कहानी है।